मनोविज्ञान विभाग द्वारा स्थापित 'संवाद मंच' के अवसर पर "*शैक्षणिक मनोविज्ञान के सम्बन्ध में गाँधी जी के विचार*" पर विशिष्ट व्याख्यान

दिनांक 15/01/2015 को **मनोविज्ञान विभाग** के द्वारा स्थापित **'संवाद मंच'** के द्वारा प्रथम विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया. इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता शिक्षाविद **प्रो.अरविंद कुमार झा** जी थे. इन्होने **'गाँधी जी के शैक्षणिक मनोविज्ञान'** सम्बंधित विचारों पर प्रेरणादायी एवं हृदयग्राही वक्तव्य दिया.

प्रो. झा ने गाँधी जी के सत्य एवं अहिंसा जैसे सिंद्धातों पर विशद रूप से प्रकाश डाला तथा क्षमा को एक मूल्य नहीं बल्कि कौशल के रूप में समझने पर जोर दिया. क्षमा को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा कि ये आहत होने वाले एवं आहत करने वाले के संवेग एवं अभिवृत्ति के स्तर पर पायी जानी चाहिए, न कि सिर्फ शाब्दिक स्तर पर. मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के लिए गाँधी जी के विचारों के अनुरूप उन्होंने कई शोध विषय भी सुझाये. उनके व्याख्यान के उपरांत शिक्षकों एवं छात्रों ने अनेक जिज्ञासाएं एवं मत व्यत किये. डॉ. शम्भू जोशी ने राष्ट्र कि अवधारणा पर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार किये जाने कि आवश्यकता पर जोर दिया. एम.एस. सी. के छात्र सौरभ राय ने कसाब को फांसी न दिए जाने पर मनोवैज्ञानिक परिणामों के विषय में प्रश्न पूंछा. एम.ए. जन संचार के विद्यार्थी रजनीश कुमार त्रिपाठी ने बाल अपराधियों के द्वारा बाल सुधर गृह में अपना समय व्यतीत करने के

उपरांत पुनः अपराध न करें इसके लिए क्या मनोवैज्ञानिक उपाय किये जाएँ? के सम्बन्ध में प्रश्न किया. वहीँ अहिंसा एवं शांति अध्ययन के ब्रजेश कुमार शाक्य ने यह पूंछा कि भारत-पाकिस्तान मतभेद के सन्दर्भ में क्या जनता हिंसा पसंद करती है? एम.ए. जनसंचार के राम सुन्दर कुमार ने गाँधी जी के द्वारा अहिंसा को मानते हुए भी उनके द्वारा करो-या-मरो का नारा दिए जाने पर प्रश्न किया. मनोविज्ञान विभाग के छात्र महेश तिवारी जी ने पूंछा कि हिंसा, क्रूरता, कुंठा, तृष्णा, के बीच में एक श्रंखलात्मक सम्बन्ध हैं इन सब में हिंसा को रोकने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कौन सा होगा? अहिंसा एवं शांति विभाग में शोध कार्य कर रहीं भारती देवी ने वर्तमान समाज में गाँधी जी के विचारों कि प्रासंगिकता के विषय में सवाल उठाये.

कार्यक्रम के अंतिम पड़ाव में **मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानं विद्यापीठ** के अधिष्ठाता महोदय **प्रो. अनिल के. राय 'अंकित'** जी ने गाँधी जी के विचारों को अगाध सागर सदृश्य बताते हुए इस बात पर जोर दिया कि गाँधी जी के विचारों को सम्पूर्णता में समझने कि आवश्यकता है तथा गाँधी जी के सिद्धांतों को आचरण में उतार कर उनका अनुभव करने कि आवश्यकता पर जोर दिया ताकि गाँधी जी के विचारों पर बेहतर शोध कार्य हो सके. इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. अनिल के राय जी ने किया. कार्यक्रम का व्यवस्था प्रभार **डॉ.अमित कुमार त्रिपाठी** जी ने सम्भाला. कार्यक्रम का संचालन **डॉ. अरुण प्रताप सिंह** जी ने किया तथा इस कार्यक्रम से सम्बंधित दस्तावेजी कार्य विभाग के लिपिक **श्री अश्वनी कुमार सिंह** जी ने किया. इस कार्यक्रम में मीडिया विभाग, अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग, शिक्षा विभाग एवं दूर शिक्षा के छात्र, छात्राएं एवं शिक्षक सम्मिलित थे. इसके अतिरिक्त वर्धा के डे स्कॉलर के शिक्षकों ने भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया.